डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा-चकिया।

B.A. Part-II
HINDI Subsidiary
& General

Date:-03-02-2022

Page No.
Date

जालपा की चारित्रिक विशेषताएँ

जालपा 'गबन' के कथानक की नायिका है क्योंकि सारी कथा जालपा के इर्द-गिर्द ही उत्पन्न होती है। जालपा दीनदयाल की एकलौती पुत्री है और मुंशी दयानाथ की पुत्रवधू तथा रमानाथ की पत्नी है। उसका बचपन बड़े ही लाड़-प्यार से बीता, पिता उसकी प्रत्येक इच्छा की पूर्ति करते है। जालपा में आभूषणों के प्रति चरमोत्कर्ष लालसा है। परिस्थितियाँ उसके चरित्र में परिवर्तन लाती है और उसका चरित्र त्याग और सेवा के बल पर उच्च आदर्श बन जाता है। जालपा के चारित्रिक विशेषताओं को निम्न शीर्षकों में विभाजित कर सकते है —

1) आभूषणों के प्रति लालसा—

जालपा को आभूषणों से बचपन से ही लगाव था। विवाह पर आये आभूषणों में चंद्रहार कहीं नजर नहीं आता, परिणाम स्वरूप झुंझलाहट से चिढ़कर वह दृढ़ निश्चय करती है, "जब मालूम हो गया कि चन्द्रहार नहीं है तो उसके कलेजे पर चोट लगती है-----।"

2.) आत्म सम्मान की भावना—

जालपा में आत्म सम्मान और आत्म गौरव की बेहद

Scanned by CamScanner

ललक है। चंद्रहार न होना उसके लिए प्रतिष्ठा का विषय बन गया जिससे वह घर से बाहर नहीं निकलती, मुहल्ले में किसी से मेलजोल नहीं रखती क्योंकि उसके पास आभूषण नहीं है।

3) आदर्श पत्नी –

उसने कभी नहीं चाहा कि उसके पति उधार गहने लाये। यह उसके चरित्र की उज्जवलता है कि वह अपने आभूषणों को बेचकर गबन किया हुआ रूपया म्यूनिस्पैलिटी में जमा करआती है।

4) बुद्धिमता, भावुक नारी –

जालपा भावुक किन्तु बुद्धिमान नारी है। वह सच्चे हृदय से पति की सेवा करती है। रमानाथ की जेब से एक पत्र उसके हाथ आता है। इससे सारी स्थिति साफ हो जाती है। वह आभूषण बेचकर रूपया जमा करती सर्राफ का कर्जा भी चुका देती है।

जालपा भारत का उगता हुआ नारीत्व है। वह भविष्य के तूफानों का अग्र सूचना है। उसने वर्तमान के राह पर मजबूती से पाँव रखा है और भविष्य की ओर निःशंक दृष्टि से देखती है।

Scanned by CamScanner